20/3/1966 रविवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है.....

ओमशांति! मीठे–2 बच्चों ने, सभी सेन्टर्स के बच्चों ने ये गीत सुना। सभी सेन्टर्स के बच्चे जानते हैं कि बेहद के बाप से वा बापदादा से हम फिर से 5000 वर्ष पहले माफिक विश्व की बादशाही ले रहे हैं अर्थात् कल्प–2 हम विश्व की बादशाही बाप से लेते आये हैं। ज़रूर बादशाही लेते आये हैं, फिर लेते हैं अर्थात् जरूर वो बादशाही गंवाते हैं। अभी जो भी बच्चे हैं, देखो यहाँ बैठे हैं, कोई भी काम करते हैं, जानते तो हैं कि अभी हमने बेहद के बाप की गोद ली है वा उनके बने हैं। और है भी तो बरोबर कि बैठे हुए हैं घर में। ऐसे नहीं है कि घर में नहीं बैठे हुए हैं... पुरुषार्थ कर रहे हैं बेहद के बाप से ऊँच पद पाने के लिए। पढ़ाई चल रही है और जानते हैं कि बरोबर हमको ज्ञान सागर, पतित–पावन, सद्गति दाता शिवबाबा ही, जो हमारा बाबा भी है, टीचर भी है और गुरू भी है और कल्प–2 ऐसे ही है और वही है। कोई दूसरा नहीं है। उनसे हम वर्सा लेते हैं। तो देखो, इसमें कितना पुरुषार्थ करना चाहिए ऊँच पद पाने के लिए। अभी अज्ञान काल में जब स्कूल में बच्चे पढ़ते हैं तो टीचर पढ़ाते तो हैं ही, कई बच्चे 100 मार्क्स से, नवे मार्क्स से पास होते हैं, कई 5 मार्क्स से पास हो जाते हैं। ये भी तो चलाया हुआ है। अभी ऐसे नहीं कहते हैं कोई माया हमको विघ्न डालती है या तूफान डालती है। ऐसे तो कभी नहीं कहते थे। न पढ़ते थे पूरी तरह से; क्योंकि कोई न कोई और बंधन में जा करके पड़ते थे। खेलना–कूदना या कुछ खराब होना, कोई संगत में फँस जाना। इसलिए पढ़ाई पर न विचार चलता था, न इतना पढ़ते थे तो नापास हो जाते थे। अभी ऐसे तो नहीं कहेंगे कि इनको माया का तूफान लगता है जैसे अभी कहते हैं; क्योंकि नहीं पढ़ते थे, चलन ठीक नहीं थी। बदचाल होते थे। टीचर भी सर्टीफिकेट देते थे कि ये बदचाल है और मायट भी जानते थे कि ये बच्चा बदचाल बन गया है। कोई न कोई के संग में खराब हुआ है। अभी वहाँ इस माया की तो बात नहीं रहती थी ना। रावण की तो बात नहीं रहती थी ना। देहअभिमान की तो बात नहीं रहती थी ना। ....न पढ़ते थे। तुम बड़े–2 अच्छे–2 आदमियों के बच्चे देखेंगे, कोई–2 बच्चे तो अच्छे चढ़ जाते हैं, कोई–2 बच्चे कोई के संगदोष में आ जाते हैं, कोई शराब पीने लग पड़ते हैं या खराब चाल हो जाती है, गंदे तरफ में चले जाते हैं। तो फिर बाप कह देते हैं कि ये कपूत बच्चा हो गया। ऐसे तो कहेंगे ना। पढ़ना तो उसमें भी जितना कोई पढ़े। जितना भी पढ़े, बहुत ही सबजेक्ट्स हैं... बहुत ही कोर्सेस है पढ़ने का, बैरिस्टरी का, फलाने का, अनेक प्रकार के हैं। यहाँ ... प्रकार का है। वहाँ भगवान तो कोई नहीं पढ़ाते हैं, न मनुष्य पढ़ाते हैं। और यहाँ तो बच्चे जानते हैं कि हमको भगवान पढ़ाते हैं। और सच–2 अगर अच्छी तरह से हम बन जायें तो भगवती और भगवान यानी विश्व का मालिक बन जायें। ऐसे नहीं कि प्रजा को भगवती–भगवान कहा जाता है। ज़रूर देखो, श्री लक्ष्मी और नारायण को या राधे–कृष्ण को ही राजा, महाराजा या महारानी कहा जाता है, कोई प्रजा को तो नहीं कहा जाता है ना। क्यों नहीं कहा जाता है? कि उन्होंने अच्छी तरह से न पढ़ा। यानी ये भी राजा–रजवाड़े अभी जो पढ़ रहे हैं वो तो जानते हो कि बरोबर बाप पढ़ाते हैं। बेहद का बाप पढ़ाते हैं जिस पढ़ाई को कोई भी जानते नहीं हैं फिर ; क्योंकि नयी दुनियाँ के लिए नयी पढ़ाई होती है। इसलिए ये पढ़ाई सभी भूल जाते हैं। पीछे भक्तिमार्ग के शास्त्र निकलते हैं। तो भक्तिमार्ग में ही लग जाते हैं। वहाँ तो उनका कोई दोष है नहीं; क्योंकि भक्ति में अपन को ज्ञान और भक्ति में जाना ही। यानी अपन को ही, कोई दूसरा नहीं। ज्ञान आधाकल्प वर्सा जो मिला पुरुषार्थ किया प्रालब्ध। पीछे भक्ति वो भी तो ज़रूर करनी है। इन बंधन में फँसना ही है ज़रूर। इसमें अपना कोई दोष नहीं है। भक्ति में जाना ही है। भक्ति आ करके पूरी हुई और भगवान आ गया है। भगवान आ करके ये बताते हैं कि अभी भक्ति पूरी हुई और अभी मैं आया हूँ ज्ञान देने के लिए, पतित को पावन बनाने के लिए। अभी तुम बच्चों को फिर से पुरुषार्थ करना है। अच्छा, ये भी जानते हैं कि जिन्हों–2 ने जैसा–2 पुरुषार्थ किया था कल्प पहले भी ऐसे ही अब उनका पुरुषार्थ चलता है। कल्प पहले भी हर एक बच्चे ने...। अभी तो थोड़े बच्चे हैं, बच्चे तो और बहुत ही होंगे। फिर भी, जो कोई भी बच्चे हैं। तो अभी 25/30 वर्ष तो कोई–2 बच्चे को हो गये। पढ़ते आते हैं, उस बीच में कई न पढ़ सके, कोई संग में आ गये। ऐसे क्यों कहें कि माया का तूफान

आया। क्योंकि कोई नहीं पढ़ते हैं तो उनको माया क्या करेगी यानी बाप क्या करेगा, टीचर क्या करेगा। वास्तव में माया की तो बात ही नहीं उठती है। तो बहुत ही बच्चे न पढ़ सके तो चले गये और अपने घर में जा करके रहे; क्योंकि कहा तो जाता है ना कि घर में भी पढ़ सकते हो। जैसे स्कूल के बच्चे होते हैं, बच्चे आ करके स्कूल में पढ़ करके फिर अपने घर में चले जाते हैं। है तो ये भी वही पढ़ाई ; परन्तु भावी ड्रामा की कि पहले–2 ही इनको भट्ठी में पड़ना था। तो भाग करके आये या आ करके शरण ली। कोई को तकलीफ हुई, कोई को तंग हुआ, कोई पति ने मारा या कुछ किया। कोई को अच्छी तरह से वैराग्य लग गया और घर में न चल सकी तो भले चली आयी। ये ऐसे ही आते हैं ज़रूर, ये भी ड्रामा। ड्रामा ने समझाया जाता है कि चले आये। चले आये तो फिर कोई–2 चले भी गये। आते भी फिर भी चले गये। न पढ़ सके तो कोई न कोई जा करके नौकरी–चाकरी में लगे या जाकर शादी.. कुछ की। तो इनमें माया का भी कोई दोष इतना नहीं कहा जाये। ये तो सिर्फ एक बहाना होता है कि माया के तूफान से हम पढ़ न सके। ऐसे नहीं कहते हैं कि संग दोष लग जाता है या मेरे में कोई विकार ऐसे जबरदस्त हैं जिससे हम पढ़ और पढ़ा नहीं सकती हैं। ये ऐसे समझना चाहिए। सिर्फ ऐसे क्यों कहा जाये कि माया ने हमको तूफान लगाया और मैं गिर पड़ी। वास्तव में माया का तो कोई दोष नहीं है ना। ये तो अपने ऊपर है कि जैसे शिक्षा मिलती है बाप की, टीचर की, गुरू की इकट्ठी–कम्बाइण्ड वैसे चलना चाहिए। अगर कोई नहीं चलते हैं तो समझेंगे कि ये संगदोष में या इनमें ऐसे कोई विकार हैं या काम का नशा, पहले–2 तो देहअभिमान का नशा। वो बाप अच्छी तरह से समझाते हैं ना– देखो, तुम सभी बैठे हो, वो सभी जो भी सेन्टर वाले हैं वो जानते हैं कि हम बेहद के बाप से विश्व की बादशाही के लिए पढ़ रहे हैं। उस निश्चय से पढ़ते हैं, अगर कोई निश्चय नहीं है पढ़ने का तो उनको तो कोई उल्लू–पाजी कहा जाये। ऐसे कभी कोई पढ़ते हैं जिनको एम–ऑब्जेक्ट का या कुछ पता ही नहीं हो। ऐसे तो नहीं होता है ना। ज़रूर यहाँ आये हैं, नहीं तो क्यों यहाँ बैठे रहें। ऐसे तो कोई होता नहीं है कि बैठे रहें, कुछ तो होगा ना। भले दूसरे भी आश्रम हैं, अरविन्द घोष है, इनका आश्रम है, फलाने आश्रम हैं, ढेर आश्रम हैं जहाँ बैठे हैं। वहाँ भी बैठे हैं। कोई–2 बैठते हैं, नहीं तो कोई–2 निकल भी जाते होंगे। ऐसे नहीं है कि सदैव कोई बैठे। कोई बैठे हैं, कोई निकल जाते हैं। कोई तो अभी बैठे हुए हैं ढेर के ढेर। वहीं पर प्राण छोड़ते हैं। कुछ उन बिचारों को प्राप्ति तो है नहीं। एम–ऑब्जेक्ट तो है नहीं। फिर वो समझाया जाता है कि क्यों वहाँ बैठे रहते; क्योंकि ये जो मठ–पंथ, डार–टार–टारियाँ पिछाड़ी की ये उनके भी भांती हैं ; क्योंकि ये समझाया जाता है। तो हो सकता है ये छोटे मठ–पंथ उसमें जा करके... बिचारा है ही उसी धर्म का तो वहीं चले जाते हैं; क्योंकि झाड़ को तो वृद्धि को पाना ही है। उनसे तो कोई कनेक्शन ही नहीं है। ये तो कनेक्शन है सारा मीठे ते मीठे दैवी झाड़ का। ये भी समझाया जाता है जो मीठे ते मीठे झाड़ का होगा...। अभी मीठे ते मीठे झाड़ का तो बाप ने समझाया कि सबसे मीठे ते मीठे बच्चे इस झाड़ के कौन होंगे! पहले–2 जो सतयुगी राजा–रानी बनते होंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार; क्योंकि ये समझ में आता है कि इस समय में... क्योंकि तुमको बुद्धि मिली, ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला। अभी तुम समझते हो कि बरोबर सतयुग में भी जो पहले–2 नम्बर में आए हैं... उन्होंने यहाँ संगम पर बहुत अच्छी पढ़ाई पढ़ी होगी। ये तो अभी तुम बच्चों को अच्छी तरह से समझ में आया है ना। जिन्होंने कल्प पहले भी अच्छी–2 तरह से पढ़ाई पढ़ी वो सूर्यवंशी घराने में भी गये। चंद्रवंशी घराने (में) राजाई भी की। जब उनमें ऐसे भी बने जो वहाँ अंदर रहते हुए वो आ करके पिछाड़ी में उनको राजाई थोड़ी मिली। नहीं तो नौकरी–चाकरी में ही रहे। उससे तो फिर विचार चलता है कि भला उनसे जो राजाई घराने में गये और एकदम पिछाड़ी में जा करके पड़े। घर में रहते हुए न पूरा पढ़ा; क्योंकि ये है उनके लिए जो घर में रहते हुए...। ऐसे तो बहुत हैं जो गृहस्थ–व्यवहार में भी रहते हुए अर्पणमय जीवन है। ऐसे भी हैं। फर्क तो रहता है ना। जो अच्छी तरह से पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं, चाहे यहाँ हो, चाहे वहाँ हो, दोनों में ; क्योंकि यहाँ भी तो आ गये। यहाँ भी तो इसी धंधे के लिए आये कि पढ़ें और पढ़ावें। अच्छा न पढ़ और पढ़ा सकते हैं...काम में लग जाते हैं। अच्छा वो भी यज्ञ की सेवा है। ये तो समझ में

आता है बरोबर ये कोई राजाई पद तो इतना नहीं पहले पा सकेगा। ...पिछाड़ी में भी आयेंगे। ठीक है ना। फिर विचार किया जाता है कि जो बाहर में रहते हैं वो भी तो पढ़ाई पढ़ते हैं। देखने में आता है कि यहाँ के रहने वाले से भी बाहर के पढ़ने वाले इनसे वो अच्छे होशियार होते जाते हैं। ऐसे भी देखने में आता है। बाबा समझाते रहते हैं ना बाहर वाले और भी अच्छे ; क्योंकि बाप भी कहते हैं गृहस्थ व्यवहार वाले कमल फूल के समान रह करके...। अच्छा, वास्तव में ये तो है गृहस्थियों के लिए। ....सभी गृहस्थी तो नहीं हैं ना। कोई कन्या है शुरुआत में, उनको कोई गृहस्थी तो नहीं कहेगा ना। कुमार है, अभी गृहस्थ–व्यवहार में गया तो नहीं। पढ़ते हैं ना अभी। पढ़ने वाले को, पढ़ाई वाले को कोई ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि गृहस्थ व्यवहार में है। ऐसे नहीं कहेंगे। नहीं, वो तो पढ़ाई पढ़ते हैं। तो जो कुमार में हैं वो कोई गृहस्थ व्यवहार में नहीं हैं। कुमारियाँ गृहस्थ व्यवहार में नहीं हैं। वो तो फिर वानप्रस्थ वाले हैं जो सब कुछ बच्चों को दे करके...। ऐसे बहुत हैं। आगे तो बहुत होते थे। अभी तो दिन–प्रतिदिन तमोप्रधान होते जाते हैं। इसलिए वानप्रस्थ में तो क्या, मरते समय भी धंधे को छोड़ते नहीं हैं। नहीं तो आगे असुल कायदा था 60 वर्ष में वानप्रस्थ धर्म लेते थे। पीछे छोड़ करके सन्यास में चले जाते थे। जैसे बाबा कहते हैं इनका भी बाबा का लौकिक, वो भी बनारस में जा करके बैठ गये थे। उसको वानप्रस्थ अवस्था कहा जाता है कि बस पीछे गुरू करके रास्ता लेवे अपने मुक्ति या जीवनमुक्ति का; परन्तु ये तो अभी बच्चों को मालूम पड़ा। समझाया कि कोई भी वापस जा नहीं सकते हैं कायदे के अनुसार। सिवाय एक कोई भी सद्गति को, ऊँच पद को पा नहीं सकते हैं। अच्छा, अभी ये भी तो समझ गये कि सभी कोई स्वर्ग में तो नहीं जाते हैं। कोई मुक्तिधाम में जाते हैं, कोई जीवनमुक्तिधाम में जाते हैं। अभी ये भी तुम समझ गये हो कि बरोबर जो–2 देवी–देवताएँ जीवनमुक्तिधाम में थे वो फिर भी आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना हो रही है। अभी जितना–2 आदि सनातन देवी–देवता धर्म में पुरुषार्थ करते हैं, कोई भी, एक तो जो यहाँ रहने वाले हैं, दूसरा बाहर में बच्चियाँ हैं, कुमार हैं और गृहस्थी भी पुरुषार्थ करते हैं कि हम बाप से वर्सा पावें। तो ढेर हुए ना। फिर बाप समझाते हैं उनमें भी कुमारी है तो उनको चांस अच्छी है; क्योंकि कोई हेयरपैरेण्ट तो है नहीं बाप का। तो इस बाप का हेयर नहीं, इन बाप का तो हेयरपैरेण्ट बन ही जाते हैं; क्योंकि ये सभी बाप से वर्सा लेने के लिए हकदार हैं। तो इनमें सबसे अच्छी तो हैं कुमारियाँ; क्योंकि बंधन मुक्त हैं। वो जो बच्चे हैं उनको तो लालच रहती है कि बाप का वर्सा मिलना चाहिए। तो वो वर्से के पिछाड़ी तो ज़रूर भागेंगे, यहाँ जबकि पावे। फिर भले कई कुमार हैं जो पुरुषार्थ करते हैं इस तरफ में, तो भी लालच तो लगी रहती है ना। भले ऐसे भी कोई हो, अच्छा वो भी वर्सा मिलेगा, ये भी ले लेते हैं। फिर उस वर्से को भी छोड़ें क्यों! वो भी ले लेते हैं और ये भी ले लेंगे। तो दोनों तरफ में पढ़ाई पढ़ते हैं, ऐसे भी बच्चे हैं। किस्म–2 के बच्चे हैं जो आ करके पढ़ाई पढ़ते हैं। बाबा बैठ करके वैराइटी समझाते हैं। अच्छा, अभी ये तो समझ गये बच्चे जो यहाँ रहने वाले हैं, बहुत पुरुषार्थ करते हैं वा पुराने हैं, अच्छे पद भी पा लेते हैं। कोई बाहर वाले भी अच्छा पद पा लेते हैं। जैसे यहाँ वाले अच्छा पद पा लेते हैं, बाहर वाले भी पा लेते हैं। ...यह भी जरूर है कि बरोबर जो यहाँ रहने वाले हैं उनको तो अंदर ही रहना होता है। बाहर वाले तो पीछे कोई साहूकार भी बन जाते हैं। तो देखो, बाहर वाले फिर कोई ऐसे साहूकार बन जाते हैं ; जो जाने से ही साहुकार बन जाते हैं.....उनको तो फिर दास–दासियाँ भी रहती हैं। फिर यहाँ जो न पढ़ेंगे वो तो दास–दासियाँ होंगे। फिर उनको अगर ऊँचा पद न मिलेगा वो जा करके त्रेता के पिछाड़ी में 5,8 या 4 या 3 या 2 जन्म मिलेगा, उससे तो वो साहूकार अच्छे ना। जो सतयुग से ले करके फिर उनकी साहूकारी भी कायम रहती है। तो फिर वो ही अच्छे हुए ना। यहाँ आ करके, न पढ़ करके, पिछाड़ी में सो भी बिचारे दास–दासियाँ बन करके, इससे तो फिर वो गृहस्थ व्यवहार में रह करके प्रजा में .. अच्छी साहूकारी क्यों नहीं ले लेनी चाहिए! ये विवेक कहता है, बुद्धि कहती है। अभी वो हमारे पास हैं तो नहीं। रहते तो हैं गृहस्थ व्यवहार में। वो तो कोशिश करते हैं कि हम राजाई पद में पावें और ऊँच पद पावें। राजाई पद नहीं पाते हैं तो भला अच्छा वो वहाँ से.. खिसकते हैं तो भला प्रजा में तो अच्छा पद पायेंगे ना। तो वो तीखे हो

गये ना, जो प्रजा में अच्छा पद पा लेवे जन्म–2 और दास–दासियाँ भी उनके पास रहती हैं। उनका भी ऐसे है, राजाओं से भी बड़े साहूकार बन जाते हैं। पिछाड़ी वाले जो राजायें होते हैं, पहले वाले जो होते हैं वो तो सुखी हुए ना। बाहर वाले अगर अच्छी तरह से पुरुषार्थ करे तो यहाँ मुझ सदैव रहने वाले से बहुत ऊँच पद पा सकते हैं, राजाई भी पा सकते हैं तो बहुत साहूकारी पद पा सकते हैं। तो है सारा पुरुषार्थ के ऊपर। जितना–2 जो पुरुषार्थ करे इतना–2 ऊँच पद पा सकते हैं। पुरुषार्थ कोई छिपा नहीं सकते हैं। जो प्रजा में भी बड़े ते बड़ा साहूकार बनेगा वो भी कोई छिपा नहीं रहेगा। बाबा कहेगा कि नहीं, ये प्रजा में जो साहूकार बनते हैं वो सबसे अच्छा है; क्योंकि जो पिछाड़ी में राजाएँ, बिचारे वो तो जाने से ही जाकर प्रजा में साहूकार बनेगा ना। वो तो जाने से जा करके नौकरी करेगा ना। ऐसे तो नहीं है कि कोई बाहर में रहते हैं उनको कोई यहाँ वालों से कम पद मिलता है। नहीं–2, बाहर वाले यहाँ रहने वालों से भी ऊँच पद पा लेते हैं। तो वो अच्छा है ना। यहाँ बिल्कुल अधम दर्जा पाना और प्रजा में जा करके ऊँचा पद पाना। तुम क्या करती...? प्रजा में ऊँचा पद पाती या यहाँ अधम पद पाती पिछाड़ी में जा करके, बताओ। अभी तुम तो यहाँ हैं यानी विवेक कहता है, बुद्धि कहती है कि इससे तो गृहस्थ व्यवहार में रह करके जैसे वहाँ जा करके अच्छा पद पावें; क्योंकि वहाँ रहने से इतना माया का तूफान नहीं आता है जितना यहाँ रहने वालों को तूफान आएंगे। वो भी तो बाप समझाते हैं यहाँ रहने वाले को तूफान बहुत आते हैं। बाहर वालों को इतना तूफान नहीं आयेगा जितना इनको तूफान आता है; क्योंकि ये तो हिम्मत करते हैं ना हम जा करके एकदम बाबा की शरण में बैठे हुए हैं; परन्तु यहाँ आने से भी वो संगदोष में बिल्कुल ही निकम्मे बन जाते हैं। इसलिए उनका पद कोई अच्छा नहीं है। ....ये बाबा अभी बताते हैं। क्यों? बाबा जानते हैं कि पिछाड़ी में तुम सबको अच्छी तरह से मालूम होगा। बाहर–2 वाले कोई–2 तो बहुत साहूकार बनेंगे और यहाँ वाले जाकर छी–2 दास–दासियाँ बनेंगे। सो भी चलते–2 पिछाड़ी में सब साक्षात्कार होता रहेगा; क्योंकि जब इम्तहान का समय होता है ना, बाकी थोड़ा रोज़ रहता है, तो इम्तहान का मालूम पड़ जाता है कि कौन–2 किस प्रकार से पास हो जायेगा। तो क्या यहाँ पता नहीं पड़ेगा? यहाँ ही पता पड़ जायेगा कौन–2 किस प्रकार का पुरुषार्थ करते हैं, क्या–2 पद पायेंगे, बहुतों का ; क्योंकि हर एक सेन्टर के अलग–2 रिज़ल्ट का तो पता पड़ता है ना जब जाते हैं दौरे पर या यहाँ आते हैं। यहाँ सब तरफ से रजिस्टर आते हैं और फिर वो आते भी हैं तो मालूम तो पड़ता है ना कि नम्बरवार सब पढ़ते हैं। कोई अच्छा पढ़ते हैं, कोई तो अपना सेन्टर आपे ही चला लेते हैं। कोई तो सेन्टर चलाने वाले से तीखी बन जाती है। ऐसे बहुत हैं, ढेर हैं, जो सेन्टर बनाने वाले से, जो पढ़ती हैं, वो जाने से ही सेन्टर चलाने वाले से बड़ी तीखी जाती है। तो है सारा पुरुषार्थ के ऊपर ना। ऐसे नहीं कहेंगे घड़ी–2 कि माया का तूफान आता है। नहीं, चलन ऐसी होती है फिर। श्रीमत पर नहीं चलते हैं। वहाँ भी मास्टर की मत पर नहीं चलते हैं। वा अपने माँ–बाप की मत पर नहीं चलते हैं; क्योंकि संगदोष में फँस जाते हैं या कोई न कोई हाबी में चले जाते हैं। ...बड़े आदमियों के बच्चे हाबी में भी चले जाते हैं। पैसा उड़ाना, ये करना, वो करना या कोई क्रोध होगा तो सबसे लड़ते रहेंगे, झगड़ते रहेंगे। अनेक प्रकार के होते हैं ना बच्चे। तुम भी बच्चे ही हो ना। दुनियाँ में भी तो बच्चे होते हैं ना। वो तो बाप के बच्चे होते हैं फिर उनका बाप भी होता है। ये तो तुम उस बाप के बच्चे हो जिनका फिर ऊपर में कोई बाप नहीं। जिसके लिए ही तुम समझते हो कि बरोबर ये हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, गुरू भी है और फिर यहाँ संग भी ब्राह्मणों का है। अगर वहाँ भी जाती है, सेन्टर में रहती है तो भी अंदर ही घर में रहती है। कोई बाहर इतना नहीं जाते–करते हैं। वो मनुष्यों को तो बाहर में बहुत जाना है। शादी–मुरादी फलाना यहाँ–वहाँ बहुत जाना पड़ता है और बरोबर कई–2 बच्चे संगदोष में भी फँस पड़ते हैं। कहाँ उल्टा–सुल्टा खा लेते हैं। दो–2 वर्ष, तीन–2 वर्ष, चार–2 वर्ष अच्छे चलते–2 कोई न कोई वक्त में संगदोष में आ जाते हैं। ऐसे क्यों कहें कि बस माया का तूफान आया। नहीं–2, फिर उनकी अपनी ही मूर्खता है जो पढ़ाई और ये जो डायरेक्शन्स हैं उन पर न चल और जा करके संगदोष में फँस मरते हैं। ऐसे क्यों नहीं कहें कि बाबा, हम अपने ही पैर के ऊपर आपे ही कुल्हाड़ा मारते हैं। ऐसे

रावण के ऊपर या माया के ऊपर क्यों दोष देना चाहिए। ये तो बाप समझते हैं ना कि ज़रूर ये देखो चलते–2 ये संगदोष में ....ये हो गया, इनको देहअभिमान आ गया, फलाना हो गया। यूँ क्यों कहें कि माया तूफान देती है। बस, माया के ऊपर दोष रखते रहते हैं। बहुत करके माया के ऊपर दोष नहीं रखना चाहिए। ये तो अपनी चलन उल्टी होती है; इसलिए नापास होने का डर लगता है। गिरते हैं या बहुतों को तंग करते हैं। ऐसे भी तो होते हैं ना, बहुतों को तंग करते हैं।... उनको समझाया तो जायेगा ..... अभी ये ब्राह्मण कुल के नहीं हैं। अभी जा करके शूद्र कुल के बन गये हैं या अपने घर लौट गये। ऐसे नहीं है कि घर में कोई ब्राह्मण कुल के नहीं हैं। ब्राह्मण कुल के भी हैं; परन्तु जो ब्राह्मणपना छोड़ देते हैं, पढ़ना–पढ़ाना छोड़ देते हैं, फिर जैसे के तैसे बन जाते हैं उनको तो फिर ब्राह्मण नहीं कहेंगे ना। जो यहाँ से चले गये। देखो, कितने चले गये! फिर कोई ब्राह्मण थोड़े ही कहलायेंगे। हाँ थे, फिर जा करके शूद्र बन गये हैं। अच्छा बाबा, फिर क्या वो जो शूद्र बन गये, वो भी स्वर्ग में आयेंगे? हाँ बच्चे, वो भी आयेंगे। ऐसे भी नहीं कि वो नहीं आयेंगे। यहाँ से हो करके जो गये, बाबा तो कहते हैं– थोड़ा भी ज्ञान सुना तो भी प्रजा में आ जायेंगे। तो चलो, वो भी कोई प्रजा में आ जायेंगे; क्योंकि आना तो है ना। यहाँ वाले जो हैं, बड़ा झाड़ है, कोई कम झाड़ थोड़े ही है। ये हिन्दू जो कहलाने वाले हैं और जो कनवर्ट हो गये हैं किस–2 धर्म में, वो सब वास्तव में हैं तो आदि सनातन देवी–देवता धर्म के ना। फिर भी तो वो आयेंगे ना। आ करके फिर कनवर्ट होंगे यानी दूसरे धर्म में फिर आयेंगे। आयेंगे तो पहले यहाँ ना। आ करके फिर बदल हो जाते हैं। आते क्यों नहीं हैं हिन्दू धर्म में, पीछे दूसरे–2 धर्म में...। ऐसे बहुत ही हैं, सिक्ख धर्म में भी होंगे, फलाने धर्म में... बहुत होंगे जो भी आयेंगे। मुसलमान धर्म में है, पारसी धर्म में है, अनेक आयेंगे। तुम देखेंगे, वण्डर है। दूसरे धर्म वाले भी आ तो सकते हैं ना। अच्छा, मुक्ति का तो वर्सा ले सकते हैं ना। ऐसे तो नहीं कि कोई नहीं आ सकते हैं। कोई भी आ सकते हैं। जिसको अपने घराने में ऊँच पद लेना होगा वो भी आ करके ये लक्ष्य ले जाएं कि बाप को याद करके...। ये आये हैं यहाँ। तुम बच्चों को आगे साक्षात्कार कराया था कि बरोबर दूसरे–2 धर्म वाले भी ऐसे आते हैं बड़े मुख्य। आ करके लक्ष्य लेकर चले जाते हैं कि बरोबर बाप को याद करना। अभी इसमें ऐसे तो नहीं यहाँ बैठेंगे तब लक्ष्य में रह जायेंगे, घर जायेंगे तो लक्ष्य में नहीं रह जायेंगे। नहीं, कोई भी यहाँ आवे, किस भी धर्म का हो, वो समझ करके ये तो बरोबर बात है, हमको तो बाप को ही याद करना है। वही बाबा है जो कहते हैं मन्मनाभव, मुझे ... करो और वो बोलते हैं अपना याद करो, शांतिधाम को याद करो, सुखधाम को याद करो। अच्छा, शांतिधाम को तो अच्छी तरह से याद कर सकते हैं ना। तो चलो, जा करके शांतिधाम को याद करेंगे और अपने धर्म में ऊँच पद पा लेंगे जो मुक्तिधाम में रहने वाले हैं। तो जो आयेंगे सो वो फिर अपने धर्मवालों को भी ऐसे ही कहेंगे। अभी मन्मनाभव, बाप को याद करना है तो मुक्ति मिल जायेगी; क्योंकि उनको जीवनमुक्ति तो मिलती नहीं। न उनको आयेंगे, न उनकी दिल लगेगी। सच्ची–2 दिल जिसकी लगती है वो यहाँ लगती है। वो तो अच्छी तरह से सर्विस भी करते हैं, दिल भी लगती है, आप समान भी बनाते हैं। बाकी जो धर्म वाले हैं, क्या–2 होते हैं, वो तो आगे चलकर देखते रहेंगे ना। ये समझ सकते हैं कि अनेक धर्म वाले आयेंगे ज़रूर। किस्म–2 के आयेंगे; क्योंकि जब बहुत कोई हो जाते हैं ना, देखो जो गुरू लोग हैं किस–2 के तो उसके लाखों–करोड़ों भी होते हैं। जैसे आगाखान हैं तो उनके बेशक करोड़ों होंगे। अभी इनके तो सब होने के हैं ना। पिछाड़ी में आ करके बच्चे ये बाप को पहचान तो जायेंगे ना। वो जो फिर कहते हैं– अहो प्रभु तेरी लीला। वो तो आयेंगे तो सही ना, समझेंगे तो सही ना। तो बाप बैठ करके समझाते हैं बच्चों को कि जिसको भी अच्छी तरह से ऊँच पद लेना है...। ये तो सब बच्चों को समझाया जाता है, इनको भी समझाया जाता है। और बहुत सेन्टर्स में ऐसे भी हैं जो पढ़ाई पर कुछ अटेन्शन नहीं होता है। ऐसे भी हैं, ढेर हैं। पढ़ाई के ऊपर अटेन्शन नहीं है तो समझा जाता है कि ये बिचारे इतना ऊँच पद नहीं पा सकेंगे। खुद भी कह देते हैं हमको फुर्सत ही कहाँ है। अगर निश्चय किसको हो तो वो कह नहीं सके मुझे फुर्सत कहाँ है। वो तो एकदम लग पड़े; परन्तु तकदीर में ही नहीं है तो फिर वो लोग ऐसे ही कहेंगे। बाकी अच्छी जिनकी

तकदीर है वो थोड़े ही कहेंगे। वो बोलेंगे– नहीं, हम तो रात–दिन बाबा से मेहनत कर–करके और पुरुषार्थ कर–करके अपना वर्सा लेंगे। तो वो भी बच्चे समझते हैं कि पुरुषार्थ भी उनका कल्प पहले मुआफिक ही चलता है। वो भी देखने में आयेगा कि कितना ये पुरुषार्थ करते हैं। देखेंगे तो समझेंगे कि हाँ, ये बच्चे भी कल्प पहले पुरुषार्थ जितना किया था इतना कर रहे हैं। हाँ, कभी पढ़ाई पर अच्छा अटेन्शन जाता है, कभी संगदोष में खराब हो पड़ते हैं। हम तो संगदोष कहेंगे ना। ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि इनके ऊपर...। अगर संगदोष कहें तो भी कहें कि ग्रहचारी है। इसको ग्रहचारी भी कह सकते हैं कि भई, ये चलता तो अच्छा है; परन्तु अभी शायद इसकी कुछ कमाई में ग्रहचारी है। फिर माया को भी क्यों लावें बीच में। भले माया भी कह सकते हैं। ग्रहचारी भी कह सकते हैं। ग्रहचारी है। अभी इनकी शुक्र की दशा तो थी, ब्रहस्पति की दशा थी, अभी मंगल की दशा है। आगे चलकर शायद फिर से दशा सुधर जावे। कोई ऐसी दशा होती है...जो घात भी कर देवे। राहू दशा बैठ जावे तो गिरा देवे एकदम नीचे से। तो ये भी तो कह सकते हैं ना कि भई आजकल इनके ऊपर कोई दशा बैठी है। बाबा खुद भी बड़े–2 अच्छे–अच्छों को कह देते हैं कि दशा बैठी है। बाबा जो कुछ कहते हैं, मानते ही नहीं हैं। भगवान की नहीं मानते हैं तो क्यों न कहेंगे कि इनके ऊपर कोई उल्टी–सुल्टी दशा बैठी हुई है। नहीं तो भगवान जो कहते रहे...। बाबा ने कहा है कि अगर कोई समझे कि नहीं, ये ब्रह्मा बाबा ने कहा है, रिस्पॉन्सिबुल मैं हूँ। इसलिए बताया कि पता नहीं पड़ता है बच्चों को कि कौन डायेक्शन देते हैं; क्योंकि देहअभिमान है तो साकार के तरफ उनकी बुद्धि जाती है। देहीअभिमानी सदैव कहेंगे कि हम बाबा के ही हुक्म पर; क्योंकि दोनों हैं। हम शिवबाबा को रिस्पॉन्सिबुल रखते हैं और वो जो कहते हैं हम करते हैं। तो उनसे कोई अच्छा काम समझो न भी हुआ तो भी उनकी रिस्पॉन्सिबिलिटी शिवबाबा के ऊपर है। तो क्यों न रिस्पॉन्सिबिलिटी शिवबाबा के ऊपर चढ़ाना अच्छा है। जो बाबा कहते हैं, हम करते हैं। तो ये समझ करके कि शिवबाबा मुझे कहते हैं, रिस्पान्सिबुल वो है, करते रहें बस। पीछे रिस्पॉन्सिबुल वो है। देहअभिमान आने से कि फलाना हमको कहते हैं, शिवबाबा को भूल जाते हैं। तो फिर शिवबाबा रिस्पॉन्सिबुल ही नहीं है। पीछे वो कह देंगे कि देखो, ये मत पर नहीं चलते हैं। ये शायद समझते हैं कि ये ब्रह्मा बाबा की मत है। शिवबाबा की मत ... ये ऑर्डर करे, तो बस उनका ऑर्डर तो सिर पर एकदम धारण करना चाहिए; परन्तु नहीं, ये समझ में नहीं आता है घड़ी–2 कि ये कौन कहते हैं। भूल जाते हैं। अगर वो निश्चय हो करके कहे कि नहीं, हम तो चलते ही हैं बाबा की मत पर। अब ये जो भी कोई हमको कहते हैं, बाबा ही कहते हैं। बाबा खुद कहते हैं कि मैं तुमको कहता हूँ ना। बस, मेरा ही नाम समझो। तुम ऐसे समझो ही नहीं कि फलाना ...। पीछे अगर कोई भी चीज़ उनसे नुकसान हुआ तो रिस्पॉन्सिबुल मैं हूँ। मैं कह देता हूँ ना बच्चों को। मैं जो श्रीमत देता हूँ, अच्छा, मैं पहली श्रीमत देता हूँ, पहला–2 काम तो बाप को याद करो। अच्छा, बाबा ने डायरेक्शन दिया, तुम्हारा फर्ज है याद करना। बाबा कहते हैं धारण करो, औरों को धारण कराओ। बस, तुम्हारा धंधा ही ये है। तुमको कहते हैं अच्छा स्थूल काम में फलाना काम करके ले आओ। हाँ अच्छा, जो हुक्म। देखो, यहाँ होते हैं ना, आते हैं। कई–2 आकर यहाँ राजस्थान में जो नौकर–चाकर होते हैं ना, कोई भी होते हैं, तो कहेगा– जो हुक्म–3। यहाँ का एक फैशन है राजाओं में– जो हुक्म। ...वो तो राजायें हुक्म करते थे। यहाँ तो हुक्म ही करते हैं शिवबाबा, उनके आगे तो घड़ी–2 फट कर(कह) देना– जो हुक्म शिवबाबा–जो हुक्म शिवबाबा ; क्योंकि शिवबाबा को याद करने से अवस्था भी बहुत ऊँची चली जायेगी। घड़ी–2 शिव ही याद आएंगे। बस देखेंगे, उठते, बैठेंगे, बोलेंगे इनमें शिवबाबा ही हमको डायरेक्शन देते हैं। तो बेड़ा भी पार हो जावे। शिव को याद करने से वो बुद्धि का ताला भी अच्छा खुलता जावे, धारणा भी होती जावे। जैसे बाबा कहते हैं बच्ची को भी– अरे बच्ची, तुम घड़ी–2 ये समझो मैं शिवबाबा के रथ को शृंगार कराती हूँ तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जावे; परन्तु होता थोड़े ही है। जब तलक मैं बोलूँ नहीं, कभी भी नहीं ये समझेंगी कि हम शिवबाबा के रथ को शृंगार कराती हैं। देखो, मैं सामने बैठता रहता हूँ ना। मैं कहूँगा तो समझ लेना हाँ बाबा! अभी बच्ची किसके रथ को शृंगार कराती है? शिव के रथ को। तो

घड़ी–2 थोड़े ही उनको ये याद पड़ता है। नहीं, ये तो कहता हूँ तब। प्रैक्टिस डालने के लिए। तो उनको ये प्रैक्टिस पड़ जावे तो इसमें भी इनका बेड़ा पार हो जाये। घड़ी–2 शिव को याद करने से इनको खुशी होगी। शिव को तो घड़ी–2 याद करने की तो बाबा कहते ही हैं उठते–बैठते वही डिफिकल्टी बाबा समझाते हैं। ये बहुत मुश्किल होता है। भूल जाते हैं। अभी ऐसे क्यों कहना चाहिए कि माया हमको भुला देती है। क्यों नहीं अपनी भूल समझनी चाहिए कि हम घड़ी–2 भूल जाते हैं ; क्योंकि प्रैक्टिस नहीं है। ऐसे क्यों नहीं कहते हैं– बाबा, आधाकल्प की प्रैक्टिस नहीं है। अब ये नई प्रैक्टिस आपने दी है। वो हम घड़ी–2 भूल जाते हैं। .... भूल जायेंगे तो कोई न कोई उपद्रव हो जायेंगे, देहअभिमान में आ जायेंगे, कुछ न कुछ तुम्हारे से खतायें हो जायेंगी। अगर हिर जायेंगे तो बहुत याद करेंगे ही नहीं। ऐसे बहुत बच्चे हैं जो ज्ञान तो बहुत अच्छा देते हैं; पर बाबा को कोई याद नहीं करते; क्योंकि नॉलेज तो बाबा ने समझा दी है– नॉलेज तो बिल्कुल सहज है। वो तो कोई भी बैठकर समझा सकते हैं। जबकि शिवबाबा को याद करते रहे जिससे विकर्म का बोझा तो उतरे ना। वो घड़ी–2 आ करके उनको रंजते हैं। ऐसे तो बहुत हैं बाबा के पास। बाबा खुद जानते हैं बहुत अच्छे–2 बच्चे हैं। बड़ी अच्छी वाणी चलाते हैं, योग कुछ भी नहीं है एकदम। बाबा वो जानते हैं; क्योंकि चलन से ही समझ लेते हैं कि योग में नहीं रहते हैं। तो फिर पाप रह जाते हैं। फिर वो पापों को तो भोगना ही पड़ता है अच्छी तरह से। ... सज़ाएँ खानी पड़ती हैं। बाप तो हर एक बात में समझाते भी रहते हैं (कि) बच्चे कैसे चलो, क्या करो। घड़ी–2 ऐसे नहीं (कि) तूफान आ जाते हैं तो ये करने से... नहीं, तूफान तो सबको आते हैं। इसमें तूफान की क्या बात है! इसमें तूफान को नहीं समझे नहीं तो हेर पड़ जाती है। ऐसे समझे कि मेरी भूल है। मैं श्रीमत पर चलता नहीं हूँ या चलती ही नहीं हूँ। बाकी तुम श्रीमत पर चलो, मैं तो रिस्पॉन्सिबुल (हूँ) हर एक बात के ऊपर। सो तो बाबा देखते रहेंगे कि चलते हैं कि नहीं चलते हैं। नहीं चलते हैं तो फिर धोखा खाते हैं बहुत ही। फिर ये जो इतनी राजाई ... में आती हैं। मैं ये बाबा से राजाई ले लेता हूँ, जो फिर कोई भी हमारे से छीन न ...। सो तो बरोबर है। तुम आये भी खास इसलिए हो। हम आ करके राजयोग सीखें। कोई प्रजा योग नहीं सिखलाया जाता है। सिखलाया ही जाता है राजयोग; क्योंकि मात–पिता जो पुरुषार्थ करते हैं, वो भी तो जानते हैं, साक्षात्कार भी बच्चों को हो गया कि बरोबर देखे जाते हैं सूक्ष्मवतन में। तो बरोबर वो तो है ही है जैसे कि। उन्होंने तो पुरुषार्थ किया ही है। तो उनके पिछाड़ी कहा जाता है कि फॉलो करो। तुम भी तख्तनशीन बनो और उनके मत पर भी चलो। वो तो सरटेन है। वो तो बाबा....ये तो सरटेन है कि ये बनेंगे राजा–रानी। तो तुम बच्चे भी इनको फॉलो करो। कोई मुझे फॉलो...। मेरी तो ये राय माननी है कि मन्मनाभव, मद्याजीभव और अच्छी तरह से पढ़ो और पढ़ाओ। मैं तो डायरेक्शन देता हूँ। शिवबाबा कहते हैं कि मैं तो नहीं पढ़ता हूँ। मैं पढ़ाता हूँ तुम बच्चों को। फिर तुम्हारे जो मम्मा–बाबा.....तुम उनको फॉलो करो जो फिर उनके तख्तनशीन बन सको। तो जितना जो फॉलो करेंगे, इसलिए गाया जाता है– फॉलो फादर एण्ड मदर। बहुत करके तो फादर को कहते हैं फॉलो। यहाँ मूँझ न जाएं कि फॉलो फादर <u>क्यों</u>? फादर तो हमको सिखलाते हैं, उनको फॉलो क्या करें! यहाँ एक तो नहीं है, यहाँ तो प्रवृत्ति मार्ग है। फॉलो मदर एण्ड फादर (क्यों)कि मदर एण्ड फादर ही जोड़ा बनते हैं। तुम बच्चों को भी तो मेल और फिमेल बनने हैं। कोई मेल बनेगा, कोई फीमेल। इनका तो सरटेन है जैसे कि एक्युरेट कि बरोबर ये लक्ष्मी और नारायण जा करके बनते हैं। तो हम भी लक्ष्मी और नारायण बनने के लिए खूब पुरुषार्थ करें। उसको कहा जाता है फॉलो मदर एण्ड फादर। बाहर में जो दूसरे धर्म वाले हैं वो मदर एण्ड फादर को फॉलो नहीं कहेंगे। वो तो फादर को ही कहते हैं। फादर ही मानते हैं। यहाँ फादर–मदर मानते हैं। नहीं तो असुल है तो गॉड फादर। क्रियेटर है ना। वहाँ मदर की तो कोई बात ही नहीं है। यहाँ देखो, मदर की कैसी बात गुप्त और गुह्य है। जो कई बच्चे मुश्किल ही समझते हैं और समझाते हैं। तो बाप तो सबको समझाते रहते हैं। आए हो, गीत सुना कि बरोबर हम आये हुए हैं। यहाँ बैठे हो कि हम बाप से 21 जन्म के लिए राजाई लेने के लिए पढ़ते हैं। हाँ, पीछे जो न पढ़ेंगे तो प्रजा में चले जायेंगे। पर यहाँ आते तो राजाई पढ़ने के लिए ना। तो राजाई ले लेना

चाहिए। .... क्यों नहीं फॉलो पूरा करना चाहिए। मम्मा–बाबा तो अच्छे पढ़ते और पढ़ाते हैं। किसको मारपीट तो नहीं करते हैं। कुछ भी नहीं। समझाते रहते हैं बच्चे, ऐसे न करो, ऐसे न करो। समझायेगा तो जरूर। टीचर कोई भी सज़ा देते हैं तो स्कूल के बीच में देते हैं ना। कभी खाई है स्कूल में टीचर से सज़ा? ये हाथ निकालो। 5,7,8 को वो बैठ करके सबके आगे...। वो तो नहीं कहते हैं कि हमारी इज्जत लेते हो सबके आगे। ऐसे कहते हैं क्या? बाप होते हैं, 10/20 बच्चे बैठे हैं और गुस्सा आया कोई ने खराब काम किया, थप्पड़ लगा देते हैं। बच्चे ऐसे थोड़े ही कहते हैं मुझे इन बच्चों के आगे क्यों थप्पड़ लगाया। बच्चे हो, अच्छी तरह से न चलते हो तो थप्पड़ लगाते हैं। यहाँ कोई थप्पड़ तो नहीं लगता है। यहाँ तो शिक्षा दी जाती है भई, ऐसे मत करो; क्योंकि हैं तो सभी बच्चे पढ़ने वाले। ...बच्चों को बहुतों का तो मालूम नहीं है। कोई कहाँ खिसकता है, कोई कहाँ खिसकता है। तुम लोग को थोड़े ही मालूम दिया जाता है कि फलाने जगह में ये फलाना गया। ...ये तो ढेर आते–जाते रहेंगे, बैठ करके बच्चों को समझाते रहें क्या? नहीं। ऐसे बहुत अच्छे–2 जिसको बाबा सरेण्डर भी समझते थे, आजकल वो हैं नहीं, अपने धंधे में लगे हुए हैं। बाबा कह देते हैं अपने धंधे में लग जाओ। कहाँ भी नहीं जाओ। जाते हो तो तुम्हारी सर्विस में घाटा पड़ता है। ग्राहक फूट जाते हैं, टूट जाते हैं। जाओ, अपने धंधे में रहो फिर। बच्चे भी अगर अच्छे नहीं चलते हैं तो जाओ अपने बच्चे भी सम्भालो। उसमें न चल सकते हैं तो इकट्ठे रह करके फिर अच्छी तरह से पुरुषार्थ करो। ...उसके नसीब में नहीं है, तकदीर में नहीं है, तो बोलेगा– छोड़ दो, जहन्नुम में...। वो खतम हो जाते हैं। उनकी पढ़ाई छोड़ देते हैं। फिर ये क्यूँ कहे कि माया का तूफान हुआ! नहीं, खुद नहीं आया ध्यान में कि मुझे अभी नहीं पढ़ना है, वो छोड़ देते हैं। ऐसे बहुत होते हैं जो पढ़ते–2 बड़े–2 इम्तहान न पढ़ सकते हैं। समझते हैं कि हम फेल हो जायेंगे तो पढ़ाई छोड़ देते हैं। पीछे जो कुछ मिला वही मिला। यहाँ तो पीछे जो कोई डिससर्विस करे तो जो कुछ ज़रा रखा हुआ होगा वो भी तो खतम हो जायेंगे। जा करके अपने घर अपने धंधे–धोरी में लगे रहे। पर ऐसे न कि जो कुछ मिला है फिर बदनामी करे, तो जो मिला हुआ है वो भी खतम हो जायेगा। खोके का खोका बन जायेगा। फिर जा करके, अच्छा, न पढ़ना है तो छोड़ दो। ग्लानि क्यों करनी चाहिए फिर भी, भई हम न पढ़ सके, हम न चल सके। तो चलो, अपने धंधे में ही लग जाओ। ऐसे बहुत हैं बच्चे। बाबा कोई बैठ करके रोज़ ये समाचार पत्रों का नहीं देते हैं बच्चों को। बाबा के पास तो ढेर है। पता नहीं कितने बच्चे होंगे, कितने ऐसे–2 होंगे। कोई पढ़ेगा, कोई छोड़ेगा, कोई करेगा। ऐसे तो बहुत होते हैं। आते हैं, पढ़ते हैं 6 महिना, 12 महिना, 1 वर्ष, फिर नहीं पढ़ते हैं, फिर जा करके शादियाँ करते हैं या जा करके गंदा हो जाते हैं। यहाँ ढेर के ढेर होते हैं। अभी कितने का नाम बाबा ले करके कितने का लेगा। ये तो होता रहेगा। हज़ारों में आयेंगे, लाखों में होंगे। तो हर एक को अपनी पढ़ाई में मस्त रहना पड़े। ये सुना, गीत कितना अच्छा फर्स्टक्लास है। बाबा से हम इतना बादशाही ... लेंगे। ... छीनने वाला होगा नहीं, कोई होता थोड़े ही है। वहाँ कोई दुश्मन होते ही नहीं हैं जो एक–दूसरे से लड़े, झगड़े करे। यहाँ तो लड़ाई–झगड़ा करके बादशाही लेते हैं ना। यहाँ तो देखो बाप से योग और ज्ञान से तुम बादशाही ले रही हो और बहुत सहज है। सिर्फ वो अच्छी तरह से नहीं धारण करते हैं, न रह सकते हैं, न पवित्र रह सकते हैं। ऐसे बहुत बच्चे हैं जो वो देखते हैं कोई तो माथा खराब हो जाता है। स्त्री देखा, फलाना देखा, बस फिर हाथ लगायेगा, वो करेगा, वो करेगा। कोई मालिश करायेंगे, कोई धूर करायेंगे, कोई छाई करायेंगे। वो है क्या? वो है हल्का नशा काम का, जो दिल होती है कि हाथ लगावे, हाथ लगे ; क्योंकि वो मंज़िल तो है.. बड़ी भारी। तो देखो, उसमें ही फँस मरते हैं। फँस मरते हैं फिर उसमें अपना पद भी भ्रष्ट कर देते हैं। कुछ नामाचार भी अपना खराब कर देते हैं कि भाई, इनमें ये आदत है हाथ लगाने की, ये करने की, वो करने की, ये करने की। नहीं तो बाबा तो कहते हैं कि कोई भी एक/दो से सेवा भी मत लो। अगर सेवा यहीं से ले लेगी तो फिर वहाँ क्या सेवा होगी तुम्हारी। यहाँ तो बहुतों को सेवा भी करने की होती है ना। नहीं, कोई भी अहंकार नहीं आना चाहिए। बाबा यह देख रहे हैं बहुत ही– एक/दो से मालिश करायेंगे, एक/दो को फलाना करेगा, एक/दो से ये

करेगा। थोड़ा नशा चढ़ा तो बर्तन भी दूसरे से मँजायेंगे। ...नहीं तो यहाँ अच्छे–2 आदमी आते हैं, देखो जो सेन्सीबुल है, वो झट अपनी थाली ले करके और जा करके धोते हैं। और कोई–2 होते हैं जिनकी फिर वो ब्राह्मणी–ब्राह्मण भी, ये बड़ा आदमी है... ऐसा चल नहीं सकेगा। यहाँ तो देहअभिमान...। वो भी देहअभिमान है ना। दूसरे से थाली माँजा ये भी देहअभिमान है वास्तव में। दूसरे से सर्विस लेना ये भी देहअभिमान है। उस देहअभिमान में भी बाबा की..... तो गिर पड़ते हैं, कोई न कोई शिकस्त मिल जाती है। तो बाबा को समझाना भी ज़रूर पड़ा। क्यों? कि जब ट्रिब्यूनल बैठेगी तो फिर वो बोलेगा हमको तो ऐसे समझाया नहीं था। हमको कायदे–कानून का मालूम नहीं था। बाबा कायदा–कानून सब समझा देते हैं। फिर वहाँ कुछ भी कोई कह न सके। वहाँ साक्षात्कार ऐसा होता है जैसे कि बरोबर अभी हम खड़े हैं और ये बैठ करके हमको समझा रहे हैं और मानते नहीं। तो बाबा कहते हैं– देखो, साक्षात्कार कराया तुमको। वो ही जगह है... अरे, साक्षात्कार का भी बड़ा मज़ा है इसका। सज़ाएँ देंगे तो बिगर साक्षात्कार थोड़े ही देंगे। अच्छा, गर्भ जेल में सज़ा मिलती है, तो साक्षात्कार करके(कराके) देते होंगे या ऐसे ही देते होंगे? ऐसे कभी कोई सज़ा खाते हैं क्या? जब तलक उनको प्रूफ न मिलेगा। ये जो ईश्वर की बनी–बनायी खेल है, बड़ा कुदरती, बहुत युक्ति से बना है। जो बाप बैठ करके समझाते हैं कि बच्चे, अभी इस समय में पतित बन करके दुःखी हुई हो। वो कितना तुमको सुख था स्वर्ग में। जिसकी देखो महिमा ही कितनी है। तो फिर पढ़ाई भी ऐसे ही पढ़ो। नहीं तो अपना नुकसान कर देंगे। राजा–रानी जिसको कहा जाता है या अच्छा बहुत ऊँच पद। है तो ऊँच पद, फिर भी देखो एम.एल.ए., एम.पी., ये साहूकार, फिर भी तो ऊँच पद तो है ना। कहाँ ये खेरूद बेचारा...मेहतर, ये भी तो मनुष्य है ना। तो भले ये यहाँ थोड़ा गंदगी है, वहाँ सफाई है। पर मर्तबे तो वही होंगे ना। तो मर्तबे कोई दूसरा नहीं होगा क्या? अच्छा, बच्चों को समझाते तो बहुत हैं; परन्तु कल्प पहले माफिक हर एक की तकदीर देखी जा रही है– कैसे पढ़ते हैं, कैसे सर्विस करते हैं, कैसे अपना जीवन हीरे जैसा बनाते हैं। वो तो साक्षी हो करके हर एक एक्टर अपने–2 हर एक भाई–बहन की एक्ट देखते रहते हैं और समझते रहते हैं कि कौन–2 कितना ऊँचा पद पायेंगे। चलो बच्ची, टोली ले आओ। नहीं तो ये तो अभी की आई हुई है ; पर इनको बहुत वर्ष थोड़े न हुआ है। हमारे पास जो भी है अभी सिर्फ वाणी है। बाकी जो बाबा कहे कि नहीं, योग ठीक है। नहीं, योग कम है। फिर देखो, अभी भी बोल देते हैं योग कम है। वाणी बड़ी तीखी बोलती है। बहुत अच्छे हैं, ये बाबा जानते हैं। देखो, अब ये सुनेंगे ना तो बरोबर बाबा कहते हैं देहअभिमान है। ज्ञान अच्छा है, योग कम है। अभी देखो नाम ले करके कहा ना। सुनेंगी ना। हैं भी तो एक्टर ना। अभी वो समझ जाएंगी बाबा बिल्कुल ठीक बोलते हैं। ..... बाप से वर्सा लेने की एक हट्टी। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।